Bihar Board Class 8 Hindi Notes Chapter 14 पीपल

पीपल

कविता का सारांश-जंगल का श्रेष्ठ पेड़ पीपल युगों से अचल-अटल होकर स्थित है। उसके ऊपर नीले आकाश और नीचे धरती पर नदी-झील हैं। पीपल के चारों ओर जामुन, तमाल, इमली आदि के पेड़ हैं। पानी से निकला हुआ कमल के डंठल पर लाल-लाल, कमल खिले हैं। तालाब में तिर-तिर की आवाज करते हुए हंस क्रीड़ा कर रहे हैं।

ऊँचे पहाड़ के टीले से धरती पर झरना झर-झर की आवाज कर गिर रही है। वही झरना झरकर पानी का रूप ले लेता है। झरना के पास खड़ा पीपल झरना का कल-कल छल-छल की आवाज सुनते रहता है। पीपल के पत्ते ढल-ढल की आवाज करते. गिर रहे हैं। गोल-गोल पीपल का पत्ता डोल-डोलकर मानों कुछ कह रहा हो । पक्षियाँ पेड़ पर आते हैं और फल चुन-चुन कर खाते हैं।

'जब वर्षा ऋतु की फुहार बरसने लगते हैं तो पंक्षियों का गायन आरम्भ
हो जाता है। जब-जब शीतल हवा बहती है तब-तब कोमल पल्लव हिल
इलकर सर्सर, मर्मर की मीठी आवाज करने लगते हैं। बल-बल भी
पल्लव को गातें देख चह-चहाने लगते हैं। नदियाँ बहकर गाती रहती हैं। पीपल के पत्ते रह-रहकर हिलते रहते हैं। पेड़ में जितने ही खोखल हैं सब में पक्षी और गिलहरियों के घर हैं।

जब शाम होती है । सूरज अस्ताचल की ओर किरणें समेटकर चली जाती हैं सारा संसार सुना दिखाई पड़ने लगती है। अँधियाली संध्या को देख पक्षियाँ

अपने-अपने घोंसलें में आती हैं। लोग सोने लगते हैं । नींद में लोग रात बिता देते हैं। फिर प्रभात होती है। पूर्व दिन की भाँति फिर सभी पेड़-पौधे दिखाई पड़ने लगते हैं। चकोर जहाँ रात रो-रोकर बिताती है वही दिन में मयूर नाचते दिखते हैं । लताएँ एक-दूसरे से आलिंगन कर रही हैं। उनका यह आलिंगन चिर-आलिंगन है। पीपल के पेड़ के नीचे जब पथिक आते हैं तो अनायास उन्हें नींद आने लगती है।

https://www.evidyarthi.in/